मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

# नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 18, अंक 4 अप्रैल 2013

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤


महाराष्ट्र में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान कार्यक्रम 3
23 अप्रैल : विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस 3
छत्तीसगढ़ में 'बस्तर की लोक कथाएँ' पुस्तक का लोकार्पण 4
दिल्ली एवं एनसीआर में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह पुस्तक प्रदर्शनियाँ 4
लखनऊ में ट्रस्ट की तीन पुस्तकों का लोकार्पण 5
एनबीटी मुख्यालय, दिल्ली में ट्रस्टकर्मियों के लिए नई पहल 5
पुस्तक समीक्षा 6
कोरिया पुस्तक मेला में भारत होगा सम्मानित अतिथि देश 7
पंजाब में साहित्यिक कार्यक्रम 7
चिट्ठीघर 8
हिंदी सलाहकार समिति की बैठक 8


## नवीनतम प्रकाशन

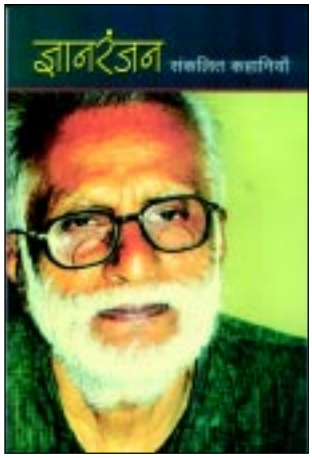


**ज्ञानरंजन : संकलित कहानियाँ**

पृ. 160 ` 75

ISBN 978-81-237-6674-4

### पूर्वोत्तर में पुस्तक संस्कृति के विकास हेतु एनबीटी की विशेष पहल

## गंगटोक, सिक्किम में पुस्तक मेला सह पठन उत्सव

पूर्वोत्तर राज्य सिक्किम की राजधानी गंगटोक में 15 से 20 मार्च, 2013 के दौरान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया एवं सिक्किम अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में पुस्तक मेला सह पठन उत्सव का आयोजन किया गया। पुस्तक मेला का आयोजन राजधानी के एक होटल, रंडेवू में किया गया। मेले का उद्घाटन राज्य के राज्यपाल महामहिम श्री बाल्मीकि प्रसाद सिंह ने किया।

राज्यपाल महोदय ने उद्घाटन-अवसर पर कहा, "पुस्तक मेला को एक उत्सव के रूप में मनाया जाना चाहिए, लेकिन इस उत्सव में आम लोगों की सहभागिता अनिवार्य है। लोगों की सहभागिता के बिना यह उत्सव सफल नहीं हो सकता।" श्री सिंह ने आगे कहा, "वर्तमान में लोग टीवी, इंटरनेट आदि पर समय बिताते हैं। ऐसी स्थिति में पुस्तक मेला का आयोजन उनका ध्यान पुस्तक की ओर आकर्षित करने में कारगर साबित होगा।" राज्यपाल महोदय ने अपने संबोधन में पुस्तक के महत्व पर भी प्रकाश डाला। वे बोले, "जो मजा पुस्तक पढ़ने में आता है उसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता। वर्तमान व्यस्त जीवन में पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि पुस्तक पढ़ने से मन को शांति मिलती है और जीवन जोश और उत्साह से भर जाता है।...आधुनिक तकनीक के कारण आज ई-बुक्स और फ्लिप कार्ड का प्रयोग शुरू हो गया है लेकिन फिर भी पुस्तक का महत्व बरकरार है।" राज्यपाल महोदय ने पुस्तक मेला के आयोजन से लेखक, प्रकाशक, विक्रेता, पाठक और विद्यार्थी तथा आम लोगों को भी फायदा पहुँचने की बात कही।

उद्घाटन-सत्र में ट्रस्ट का प्रतिनिधित्व करते

हुए मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक डॉ. बलदेव सिंह बद्दन, सिक्किम अकादमी के पूर्व अध्यक्ष सानु लामा तथा वर्तमान अध्यक्ष पेम्पा तमांग ने भी अपने संबोधन किए।

विदित हो कि पुस्तक मेला में कुल 24 स्टॉल लगाए गए, जिनमें देश भर के 12 प्रकाशकों की भागीदारी थी। मेले में पुस्तक पर 10 प्रतिशत की छूट दी गई। पुस्तक मेले में पुस्तक के अलावा सीडी तथा सहायक शैक्षणिक सामग्री आदि भी विक्रयार्थ रखे गए थे।

पुस्तक मेले के एक भाग के रूप में नेशनल बुक ट्रस्ट के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (रा.बा.सा.कें.) द्वारा 19-20 मार्च को पठन उत्सव का भी आयोजन किया गया। पहले दिन कवि सम्मेलन, सृजनात्मक लेखन कार्यशाला, चित्रांकन प्रतियोगिता, लघु नाटक, प्रहसन की प्रस्तुति आदि अनेक कार्यक्रम हुए। रा.बा.सा.कें. के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र ने स्वागत-उद्‌बोधन किया। तदंतर, सिक्किम अकादमी के अध्यक्ष पेम्पा तमांग के भी संबोधन हुए। श्री तमांग ने कहा कि सिक्किम में कविता का दौर अब पुनः शुरू हुआ है। उन्होंने इसकी गति को बनाए रखने तथा भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करने की आवश्यकता भी जताई। रा.बा.सा.कें.-संपादक श्री महापात्र व लेखिका रुचि सिंह ने विद्यार्थियों को बाल साहित्य से जुड़ी कहानियाँ सुनाईं। कवि सम्मेलन में राजेंद्र भंडारी, कपिल अधिकारी, प्रवीण खालिंग, भीम रावत, बीनाश्री खरेल आदि ने कविता-पाठ किया।

स्थानीय स्कूलों–देवराली गवर्नमेंट स्कूल, तासी नामग्याल अकादमी तथा डेफोडिल्स स्कूल आदि के छात्र-छात्राओं ने अंतरजातीय विवाह तथा समुदायों के बीच सौहार्द के साथ-साथ आत्महत्या के विरुद्ध संदेश देते अनेक प्रहसन सह लघु नाटकों की प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम के समापन दिवस, 20 मार्च को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विषय था–आज के बच्चों के आनंदमय पठन के लिए लोक कथाओं का पुनर्वाचन। अध्यक्षता श्री पेम्पा तमांग ने की। अन्य वक्ता थे–सांग मू लेप्चा, कविता लामा, रुचि सिंह, नीता निराश, शुभव्रत देव तथा एस. ब्रजेश्वर शर्मा। संचालन मानस रंजन महापात्र ने किया। पूर्वाह्न में बच्चों के लिए कथावाचन सत्र का भी आयोजन हुआ। अंत में, 19 मार्च को संपन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

विदित हो कि शहर में, 19 मार्च को सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा भी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय परिसर में अलग से एक तीन दिवसीय पुस्तक मेला का आयोजन किया गया।

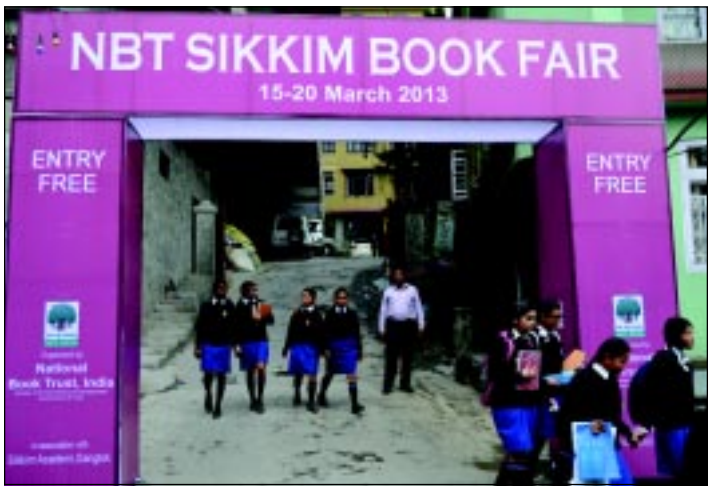

# महाराष्ट्र में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान कार्यक्रम

**औरंगाबाद एवं मुंबई :** राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह (14-20 नवंबर, 2012) के उपलक्ष्य में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा महाराष्ट्र में दो साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें से पहला कार्यक्रम 18 नवंबर, 2012 को औरंगाबाद में तथा दूसरा 21 नवंबर, 2012 को मुंबई के किताबखाना में आयोजित किया गया।

**औरंगाबाद :** 'मराठवाड़ा साहित्य परिषद' के सहयोग से ट्रस्ट ने औरंगाबाद के श्री नंदपुरकर हॉल में 16 से 18 नवंबर तक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। 18 नवंबर को ही ट्रस्ट ने एक पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम के साथ-साथ 'मराठी तथा हिंदी भाषाओं के बीच अनुवाद परंपरा का विकास' विषय पर एक संगोष्ठी भी आयोजित की।

**प्रदर्शनी का उद्घाटन :** 'मराठवाड़ा साहित्य परिषद', औरंगाबाद के श्री नंदपुरकर हॉल में तीन दिवसीय एनबीटी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन 16 नवंबर को प्रसिद्ध कवि एवं लेखक, श्री एन.डी. महानौर द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कौतिकराव थाले पाटिल (अध्यक्ष, एमएसपी) ने की। इनके साथ मंच पर पुंडालिक अतकरे (सचिव, एमएसपी) तथा श्री दादा गोरे (उपाध्यक्ष, एमएसपी) भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत में ट्रस्ट में मराठी भाषा संपादक श्री राहुल कोसम्बी ने अतिथियों का स्वागत किया तथा ट्रस्ट के प्रकाशनों, प्रदर्शनियों तथा मेलों से संबंधित गतिविधियों की जानकारी दी।

इस अवसर पर श्री कौतिकराव थाले पाटिल ने ऐसे अनेक कार्यक्रमों की यादें ताजा कीं, जो मराठवाड़ा क्षेत्र में एमएसपी के सहयोग से एनबीटी द्वारा नियमित रूप से आयोजित किए जाते थे। उन्होंने एनबीटी से यह अनुरोध किया कि वह मराठवाड़ा क्षेत्र तथा एमएसपी की जिला शाखाओं में इसी तरह के साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करे।

विख्यात मराठी कवि एवं लेखक, श्री एन.डी. महानौर ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया तथा एक लंबे समय के बाद मराठवाड़ा क्षेत्र में ऐसी गतिविधियों का आयोजन करने के लिए एनबीटी को बधाई दी। वे मराठी भाषा के लिए ट्रस्ट की सलाहकार समिति के सदस्य श्री रह चुके हैं। उन्होंने महान साहित्यिक कृतियों के अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं व भारतीय संस्कृति के बीच बहुसंस्कृतिवाद के प्रोन्नयन में एनबीटी के योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कामना की कि एनबीटी द्वारा शुरू की गई अनुवाद परंपरा और अधिक विकसित व उन्नत हो।

श्री पुंडालिक अतकरे ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

**संगोष्ठी :** प्रदर्शनी के प्रति औरंगाबाद के लोगों की प्रतिक्रिया बहुत अच्छी थी परंतु 17 नवंबर की दोपहर शिव सेना प्रमुख, बाल ठाकरे के निधन के कारण एमएसपी के सुझाव पर प्रदर्शनी सायं 5 बजे के बाद ही समाप्त कर दी गई।

**मुंबई :** एमएसपी के सहयोग से ट्रस्ट ने मुंबई के 'किताबखाना' में 21 नवंबर को एक परिसंवाद तथा पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर हाल ही में प्रकाशित पाँच बाल पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। 'नई पीढ़ी, नई तकनीक तथा पढ़ने की नई आदतें' विषय पर एक विचार-गोष्ठी भी आयोजित की गई। ट्रस्ट की मराठी सलाहकार समिति की पूर्व सदस्या तथा वर्तमान में फिल्म सेंसर बोर्ड की सदस्या, श्रीमती नीला उपाध्याय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर श्रीमती रेणुताई गावस्कर तथा श्री राजीव तांबे ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम के आरंभ में श्री राहुल कोसम्बी ने अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर श्रीमती नीला उपाध्याय ने पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए ट्रस्ट द्वारा 'किताबखाना' के सहयोग से ऐसे नियमित कार्यक्रम आयोजित करने के लिए उन्हें बधाई दी। उन्होंने इस बात पर भी अपनी खुशी व्यक्त की कि ट्रस्ट द्वारा अब बच्चों के लिए और अधिक पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं। साथ ही, उन्होंने ट्रस्ट द्वारा भविष्य में ऐसी ही अन्य कार्यशालाएँ आयोजित करने पर भी बल दिया।

श्रीमती रेणुताई गावस्कर ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रौद्योगिकी ने विषय तथा प्रकाशन के तौर-तरीकों को पूर्ण रूप से बदल दिया है। इस परिदृश्य में एनबीटी की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं अहम हो जाती है, क्योंकि वह दूसरों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि हालाँकि आज प्रौद्योगिकी का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है परंतु अभी भी बहुसंख्य बच्चे व पाठक ऐसे हैं जो इसकी पहुँच से बाहर हैं। इस स्थिति में, एनबीटी उन्हें किफायती मूल्यों पर प्रामाणिक पठन-सामग्री उपलब्ध करवाकर पठन-संस्कृति के क्षेत्र में एक महान कार्य कर रहा है।

अंत में, श्री राहुल कोसम्बी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

# 23 अप्रैल : विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस

प्रत्येक वर्ष **23 अप्रैल** को विश्व भर में **विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस** मनाया जाता है। यूनेस्को (UNESCO) द्वारा आयोजित इस दिवस का उद्देश्य पठन एवं प्रकाशन को प्रोत्साहित करना एवं बौद्धिक संपदा को कॉपीराइट के द्वारा संरक्षा प्रदान करना है।

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस सन् 1995 से प्रति वर्ष मनाया जाता है। दरअसल, 23 अप्रैल को विश्व की अनेक महान साहित्यिक हस्तियों के जन्म या पुण्य तिथि पड़ते हैं। इनमें शामिल हैं : मिगुएल दे सरवांतेज, मॉरिस द्रुओं, इन्का गार्सिलासो दे ला वेगा, हाल्दर किलजान लैक्सनेस, मैनुएल मेजिआ वलेजो, व्लादीमीर नाबोकोव, जोसेप प्ला तथा विलियम शेक्सपियर। पूरे विश्व में पठन को प्रोन्नत एवं प्रोत्साहित करने तथा पुस्तकों से जुड़े अनेक सांस्कृतिक आयामों को समेटते कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की वर्ष भर धूम रहेगी। इनमें से अनेक कार्यक्रम देशों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग या मैत्री पर बल प्रदान करने के उद्देश्य से होंगे।

पूरे विश्व के किसी एक शहर को विश्व पुस्तक राजधानी घोषित करने के उद्देश्य से यूनेस्को प्रति वर्ष अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन संगठन, अंतरराष्ट्रीय पुस्तक विक्रेता संघ तथा पुस्तकालय संगठन एवं संस्थाओं के अंतरराष्ट्रीय संघ के प्रतिनिधियों की एक संयुक्त बैठक का आयोजन करता है।

वर्तमान विश्व पुस्तक राजधानी आर्मेनिया का शहर येरेवान है। नाइजीरिया का शहर पोर्ट हार्कोर्ट 23 अप्रैल, 2013 से 22 अप्रैल, 2014 तक विश्व पुस्तक राजधानी रहेगा। विदित हो कि भारत के राजधानी शहर दिल्ली को वर्ष 2003 में विश्व पुस्तक राजधानी होने का गौरव प्राप्त हुआ था।

# छत्तीसगढ़ में 'बस्तर की लोक कथाएँ' पुस्तक का लोकार्पण

**लोक साहित्य लोक जागरूकता का प्रतीक है : डॉ. कौशलेन्द्र मिश्र**

"बस्तर का लोक साहित्य यहाँ के आम लोगों के संघर्ष, मान्यताओं एवं समृद्ध ज्ञान का प्रतीक है। लिपि के विकास के बहुत पहले से ही यहाँ की बोलियों में तमिल, राजस्थानी, अरबी और कई अन्य भाषाओं के प्रभाव शामिल हो गए थे।" ये उद्‌गार व्यक्त किए डॉ. कौशलेन्द्र मिश्र ने, जो एक चिकित्साधिकारी व साहित्यानुरागी हैं। वे श्री लाला जगदलपुरी एवं हरिहर वैष्णव द्वारा संपादित एवं नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रकाशित पुस्तक *बस्तर की लोक कथाएँ* के लोकार्पण-अवसर पर पुस्तक की समीक्षा कर रहे थे। इस आयोजन में मुख्य अतिथि अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध शिल्पी डॉ. जयदेव बघेल और अध्यक्ष स्थानीय शिक्षाविद् टी.एस. ठाकुर थे। यह आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट ने छत्तीसगढ़ हिंदी साहित्य परिषद के सहयोग के किया था।

आगंतुकों का औपचारिक स्वागत करते हुए नेशनल बुक ट्रस्ट के हिंदी संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने जानकारी दी कि उनका संस्थान पुस्तक पढ़ने की रुचि के उन्नयन के लिए किस तरह की गतिविधियों का आयोजन करता है। लोकार्पित पुस्तक पर समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डॉ. कौशलेन्द्र मिश्र ने बताया कि अबूझमाड़ की लोक कथा रक्त-संबंधी में विवाह करने से उत्पन्न होने वाले विकारों की जिस तरह से जानकारी देती है, यह साक्ष्य है कि हमारी जनजातियों की मान्यताएँ बेहद पुरातन काल से वैज्ञानिक रही हैं। पुस्तक के संपादक हरिहर वैष्णव ने बताया कि किस तरह उन्होंने विभिन्न जनजातियों की लोक कथाओं को पहले रिकॉर्ड किया, फिर उन्हें लिखा, एक बार फिर वे उन्हीं बोलियों के लोगों के पास गए और उनका परिशोधन व अनुवाद उन्हीं की मदद से किया। बस्तर की लोक-संस्कृति तथा वाचिक परंपरा के संरक्षण, संवर्द्धन एवं विस्तार-कार्य के लिए उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्ति भी ले ली।

इस अवसर पर बस्तर की पारंपरिक जड़ी-बूटी पद्धतियों को सहेजने में लगे अंतरराष्ट्रीय रूप से चर्चित वैज्ञानिक, डॉ. राजाराम त्रिपाठी ने बताया कि लोक-संस्कृति के मामले में बस्तर दुनिया का सबसे धनी क्षेत्र है और यहाँ की रचनाएँ दुनिया की किसी भी भाषा में किए जा रहे सृजन से कमतर नहीं हैं। आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ. जयदेव बघेल ने बताया कि किस तरह उनके पिताजी से सीखे पुश्तैनी ज्ञान को उन्होंने दुनिया भर में पहुँचाया। उन्होंने बताया कि बस्तर का शिल्प इंसान के जन्म से लेकर उसके अंतिम संस्कार व उसके बाद भी कुछ न कुछ अनिवार्य आकृतियाँ गढ़ता रहता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री टी.एस. ठाकुर ने उस आयोजन और पुस्तक के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भविष्य में भी ट्रस्ट इस आंचलिक क्षेत्र में अपनी गतिविधियों का आयोजन करता रहेगा। इस सत्र का संचालन ट्रस्ट में हिंदी संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने किया जबकि अंत में आभार ज्ञापन श्री सुरेंद्र रावल ने किया।

भोजनकाल के बाद आयोजन का दूसरा सत्र भी अपने में अनूठा था। इसमें हिंदी, उर्दू के साथ-साथ हल्बी, भतरी, छत्तीसगढ़ी और गोंडी आदि में रचनाओं का पाठ हुआ। जगदलपुर से आए रुद्रनारायण पाणिग्राही ने भतरी में मुर्गों की लड़ाई पर केंद्रित अपनी व्यंग्य रचना 'कुकड़ा गाली' प्रस्तुत की तो भतरी के ही दूसरे रचनाकार नरेंद्र पाढ़ी (जगदलपुर) ने भी कुत्ता पालने पर अपनी व्यंग्य रचना 'कुकुर स्वांग' से श्रोताओं का दिल जीत दिया। श्री हरेंद्र यादव ने छत्तीसगढ़ी में एक छत्तीसगढ़ी लड़के से प्रणय-निवेदन कर रही विदेशी बाला के संवाद का हास्य अपनी रचना में पेश किया। आदिवासियों के चहुँमुखी शोषण को रेखांकित करती कविताएँ दुर्योधन मरकाम ने गोंडी में और यशवंत गौतम ने हल्बी में प्रस्तुत की। हयात रजवी की उर्दू शयारी ने खूब वाहवाही लूटी। इसके अलावा शिवकुमार पाण्डेय (नारायणपुर) ने हल्बी में गीत और सुरेश चंद्र श्रीवास्तव (काँकेर) ने हिंदी में समकालीन कविताओं का पाठ किया। अभनपुर से पधारे सुप्रसिद्ध ब्लॉगर ललित शर्मा ने छत्तीसगढ़ी में अपनी व्यंग्य रचना 'जय-जय-जय छत्तीसगढ़ महतारी' का पाठ किया। अपनी अस्वस्थता के कारण कार्यक्रम में उपस्थित न रह सकने वाले बस्तर के दो वरिष्ठ रचनाकारों लाला जगदलपुरी एवं सोनसिंह पुजारी की हिंदी एवं हल्बी रचनाओं का पाठ हरिहर वैष्णव ने आदर के साथ किया। इस सत्र का संचालन श्री सुरेंद्र रावल ने किया।

इस कार्यक्रम में मनोहर सिंह सग्गू, महेश पांडे, महेंद्र जैन, खीरेंद्र यादव, जमील अहमद खान, शिप्रा त्रिपाठी, बरखा भाटिया, लच्छनदई नाग, मधु तिवारी, बृजेश तिवारी, रामेश्वर शर्मा, श्री विश्वकर्मा, पीतांबर दास वैष्णव, खेम वैष्णव, उमेश मंडावी, चितरंजन रावल, श्री पटेरिया, हेमसिंह राठौर, नीलकंठ शार्दूल, जमील रिजवी, नवनीत वैष्णव, उद्धव वैष्णव, सुदीप द्विवेदी आदि अनेक साहित्यानुरागी एवं साहित्यकार उपस्थित थे।

## दिल्ली एवं एनसीआर में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह पुस्तक प्रदर्शनियाँ

शहीद कैप्टन सुमित रॉय सर्वोदय कन्या विद्यालय, पालम एन्क्लेव, नई दिल्ली

सर्वोदय कन्या विद्यालय, शालीमार बाग, दिल्ली

**राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के एक भाग के रूप में दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लगभग 20 स्कूलों में पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया।**

# लखनऊ में ट्रस्ट की तीन पुस्तकों का लोकार्पण

**'इतिहास को नए नजरिये से देखने की जरूरत' : अनूपदास गुप्ता**

''शिव वर्मा और मौलवी अहमद उल्ला शाह जैसे चरित्रों पर शोधपरक पुस्तकें पढ़ने के बाद देश की आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारियों की भूमिका पर और अधिक पढ़ने और शोध की ललक पैदा होती है।'' उक्त उद्‌गार व्यक्त किए श्री अनूपदास गुप्ता ने, जो अंडमान राजनीतिक बंदी परिवारों के संगठन के सचिव हैं और लखनऊ मांटेसरी इंटर कॉलेज में संपन्न तीन पुस्तकों के लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से बोल रहे थे। उल्लेखनीय है कि नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों—*सरदार भगत सिंह के सहयोगी शिव वर्मा* (प्रमोद कुमार), *मौलवी अहमद उल्ला शाह* (रश्मि कुमारी) और *मौत के चंगुल में* (प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव) का लोकार्पण 31 मार्च, 2013 को शहीदेआजम सरदार भगत सिंह सभागार में संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री उमेश चंद्रा ने की।

कार्यक्रम का प्रारंभ स्कूल की बच्चियों द्वारा क्रांतिकारी समूह-गान से हुआ। श्री बैजनाथ सिंह ने अपने स्वागत भाषण में इन पुस्तकों के प्रकाशन को एक कल्याणकारी कार्य निरूपित किया। 'सरदार भगत सिंह के सहयोगी शिव वर्मा' पुस्तक पर समीक्षा प्रस्तुत करते हुए श्री रमेश दीक्षित ने कहा कि यह पुस्तक केवल शिव वर्मा पर केंद्रित नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्रता आंदोलन की अलग-अलग धाराओं का समेकित आकलन भी है। पुस्तक के लेखक प्रो. प्रमोद कुमार ने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि समूचे स्वतंत्रता आंदोलन को महज कांग्रेस या कुछ लोगों पर केंद्रित कर दिया गया और इसमें क्रांतिकारियों की भूमिका को बेहद कम कर आँका गया। उन्होंने कहा कि इतिहास लड़ने की चीज नहीं है, यह समझने का विषय है।

1857 की क्रांति के नायक मौलवी अहमद उल्ला शाह पुस्तक पर अपनी राय रखते हुए पत्रकार केबी सिंह ने कहा कि यह पुस्तक इस बात की बानगी है कि नई पीढ़ी इतिहास को किस नजरिये से देखती है। श्री सिंह ने पुस्तक के तथ्यों पर भी कई सवाल खड़े करते हुए कहा कि यह पुस्तक बहुत कुछ आगे पढ़ने और शोध करने की चुनौती खड़ी करती है। पुस्तक की लेखिका डॉ. रश्मि कुमारी ने अपनी पुस्तक लिखने की प्रेरणा शहीद स्मारक व स्वतंत्रता शोध केंद्र तथा प्रो. प्रमोद कुमार को बताया।

बाल उपन्यास 'मौत के चंगुल में' की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डॉ. सुरेन्द्र विक्रम ने बताया कि किस तरह 70 के दशक में छोटे-छोटे बाल पॉकेट बुक्स निकलते थे, जो बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। डॉ. विक्रम ने कहा कि यह पुस्तक संदेश देती है कि समूचा संसार एक बड़ा परिवार है। लेखक प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि किस तरह इस पुस्तक को लिखने का विचार उनके मन में आया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे उमेश चंद्रा ने 1857 के नायक राजा बेनीमाधव और क्रांतिकारी आंदोलन की महत्वपूर्ण सदस्या दुर्गाभाभी पर पुस्तक की जरूरत पर जोर दिया।

श्री अशोक चौबे ने धन्यवाद ज्ञापित किया । कार्यक्रम का संचालन नेशनल बुक ट्रस्ट में हिंदी संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने किया।

## एनबीटी मुख्यालय, दिल्ली में ट्रस्टकर्मियों के लिए नई पहल

एनबीटी प्रबंधन ने हाल ही में अपने कर्मियों के कल्याण एवं उनके मनोरंजन हेतु कुछ नई पहल की है। इस क्रम में ट्रस्ट के दिल्ली स्थित मुख्यालय-परिसर में फिटनेस एवं खेलकूद के माध्यम से अपने शरीर एवं मन को स्फूर्तिवान बनाए रखने के दृष्टिगत एक मनोरंजन गृह का उद्‌घाटन किया गया। इसमें एक बैडमिंटन कोर्ट के अलावा इनडोर गेम्स की भी सुविधा उपलब्ध कराई गई है। फिटनेस के लिए अनेक उपकरण उपलब्ध हैं।

इसके अलावा, ट्रस्टकर्मियों के लिए 17 मार्च, 2013 को आगरा यात्रा का आयोजन भी किया गया। ऐसा विचार है कि इस तरह की यात्राओं का आगे भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहे।

ट्रस्टकर्मियों के स्वास्थ्य-परीक्षण के दृष्टिगत 21 मार्च को दिल्ली स्थित ट्रस्ट-मुख्यालय परिसर में मैक्स हॉस्पीटल के डॉक्टरों की एक टीम ने चिकित्सा शिविर लगाया। इस शिविर में शुगर, ईसीजी आदि अनेक परीक्षण किए गए।

आगरा

# पुस्तक समीक्षा

**क़ब्र भी क़ैद औ' ज़ंजीरें भी** (कहानी संग्रह)
*अल्पना मिश्र;* पृ. 120 ` 200
***राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,*** 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-02
छद्म आधुनिकता, स्त्री-शोषण, पलायन आदि हमारे समाज की अनिवार्य प्रवृत्तियों में शामिल हो चुकी हैं। लेखिका इन सब के प्रति सजग हैं और इन्हें अपनी कहानियों में लाती हैं। नौ कहानियों का यह संग्रह गंभीर पाठकों को रुचेगा।

**बहाव** (उपन्यास); *उषा ओझा*
पृ. 144 ` 200
***सामयिक बुक्स,*** 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन. एस. मार्ग, नई दिल्ली-02
बिहार के जल-प्रलय में चिर समाधि ले चुके लोगों की स्मृति में रचा यह उपन्यास अपनी भाषा में प्रश्न उठाता है कि क्यों और कैसे तहस-नहस होती हैं मनुष्य की तमाम चेतनाएँ। कथ्य और प्रस्तुति में नयापन है।

**कायांतरण** (कविता संग्रह); *जितेन्द्र*
पृ. 120 ` 180
***किताबघर प्रकाशन,*** 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
द्रष्टा से स्रष्टा बनने के लिए जिस भाषा-हथियार की आवश्यकता होती है वह कवि के पास है, साथ ही, वह दृष्टि भी जो किसी अभिधा को कविता में बदल देती है। हमारे समय-समाज के घटाटोप पर रोशनी की तरह गिरती हैं ये कविताएँ।

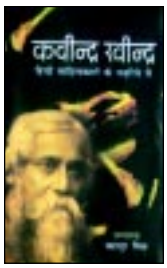


**कवीन्द्र रवीन्द्र : हिन्दी साहित्यकारों के नज़रिये से**
*संपा. : बहादुर मिश्र;* पृ. 280 ` 425
***नयी किताब,*** एफ-3/78-79, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-89
द्विवेदी बंधु (हजारी प्रसाद व महावीर प्रसाद), निराला, प्रेमचंद, माखनलाल चतुर्वेदी, पंत, महादेवी, 'सुमन', 'रेणु', दिनकर, व बहादुर मिश्र की टैगोर पर गद्य रचनाओं के अलावा अनेक कवियों की पद्य रचनाएँ, साथ ही टैगोर की रचनाओं का उम्दा संचयन है यह कृति।

**उषा यादव की श्रेष्ठ बाल कथाएँ**
*संपा. : डॉ. जाकिर अली 'रजनीश'*
पृ. 120 ` 250
***लहर प्रकाशन,*** 778, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद-211003
बाल कथाकार एवं कवयित्री उषा यादव की 20 कहानियों को चयन-संपादन करके प्रस्तुत किया गया है इस पुस्तक में। बच्चे इन कहानियों को रुचि से पढ़ेंगे।

**लक्ष्य** (कविता संग्रह)
*कविता विकास*
पृ. 96 ` 250
***बसंती प्रकाशन,*** पी-137, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23
सामाजिक सरोकार और चिंतन से युक्त परिवेशगत स्थितियों को कविता में पिरोकर कवयित्री ने काव्य लेखन की जो कोशिश की है इसमें वह सफल दीखती हैं।

**गुंजन शर्मा बीमार है** (कहानी संग्रह); *विवेकानंद;* पृ. 112 ` 200
***किताबघर प्रकाशन,*** 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
11 कहानियों का यह संग्रह अलग-अलग भाव-भूमि पर रचा गया है, जहाँ विचार को विचार की तरह प्रस्तुत किया गया है, किसी भाषण की तरह नहीं। कहानियों में आंचलिक भाषा का प्रयोग इन्हें सशक्त ही बनाते हैं।

**मुसाफिर हूँ यारो** (यात्रा संस्मरण)
*वीरेन्द्र गोयल;* पृ. 192 ` 350
***इंद्रप्रस्थ प्रकाशन,*** के-71, कृष्णा नगर, दिल्ली-51
कवि मन लेखक के देश-विदेश की यात्राओं का अभिनव गुलदस्ता है यह यात्रा वृत्तांत। नेपाल, इंग्लैंड, कुल्लू-मनाली, लखनऊ, अंडमान आदि अनेक स्थानों की यात्रा का जीवंत आलेखन है इसमें।

**स्फुरना देवी : अबलाओं का इन्साफ़**
(आधुनिक हिंदी की प्रथम स्त्री-आत्मकथा)
*संपा. एवं प्रस्तुति : नैया*
पृ. 192 ` 350
***राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि.,*** 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
हिंदी नवजागरण और उसके बाद के कुछ दशकों के दौरान स्त्री-लेखन नहीं हुआ–इस मिथ्या धारणा या भ्रामक प्रचार को तोड़ती है यह आत्मकथा। 1927 की इस कृति में गंभीर स्त्री-प्रश्नों पर विचार है।

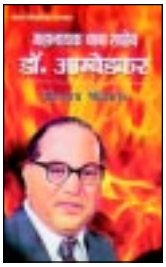


**महानायक बाबा साहेब डॉ. आम्बेडकर**
(पहला ऐतिहासिक उपन्यास)
*मोहनदास नैमिषराय;* पृ. 304 ` 80
***धम्म ज्योति चैरिटेबल ट्रस्ट,*** गली नं. 6, जी ब्लॉक, हर्ष विहार, दिल्ली-93
भारतीय संविधान के निर्माताओं में से एक तथा दलित विमर्श के महान अध्येता डॉ. आम्बेडकर के जीवन एवं दृष्टि पर नए एवं संश्लिष्ट ढंग से उपन्यास रूप में किया गया यह विवेचन गंभीर पाठकों को पठनीय और संग्रहणीय लगेगा।

**रत्ती के दोहे;** *रतन सिंह;* पृ. 136 ` 150
***रघुवीर पब्लिशर्स,*** ए-402, सेक्टर बीटा-I, ग्रेटर नोएडा-201308, यू.पी.
दोहा एक ऐसी विधा है जिसमें कम शब्दों में गूढ़ से गूढ़तम बातों को सलीके से कह देना संभव है। लेकिन दोहा रचना के लिए रचनाकार का काव्य कौशल बेहद मायने रखता है और जीवन के प्रति उसका गहरा चिंतन भी। रचनाकार इस मापदंड पर खरे उतरते हैं।

**धुएँ का बादल** (लघु कथा)
*डॉ. प्रमोद कुमार*
पृ. 80 ` 150
***जीवन प्रभात प्रकाशन,*** ए-209, साईं श्रद्धा, वीरा देसाई मार्ग
19 लघु कथाओं के इस संग्रह में हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न पात्र ही दीखते हैं। इसलिए पठनीयता सरल और परिचित-सी है। हर कहानी कुछ कहती-सी नजर आती है।

# कोरिया पुस्तक मेला में भारत होगा सम्मानित अतिथि देश

16 फरवरी, 2013 को नवभारत टाइम्स में प्रकाशित ट्रस्ट-निदेशक **श्री एम.ए. सिकंदर** का महत्वपूर्ण साक्षात्कार यहाँ अविकल प्रस्तुत किया जा रहा है। साक्षात्कारकर्ता थे त्रिपुरारि कुमार शर्मा।

**नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का अनुभव कैसा रहा?**

किसी भी आयोजन की सफलता इस बात में होती है कि जिस उद्देश्य को लेकर आयोजन किया गया, क्या आयोजक उसे पाने में सफल रहा। हमारा उद्देश्य था–अधिक से अधिक लोगों को पुस्तकों से जोड़ना। युवाओं के बीच रीडिंग कल्चर को बढ़ावा देना। इस आयोजन में हुए खर्च की पूर्ति करना। हमारे पास समय बहुत कम था, लेकिन हम सफल रहे। हमने सभी शिक्षण संस्थानों को आमंत्रित किया। परिणाम सामने है। मेले में आने वाले अधिकतर युवा और बच्चे थे। अब तो शिक्षण संस्थानों के वार्षिक कैलेंडर में इस मेले का जिक्र भी होगा। हमने एक पुल बनाया किताबों और लोगों के बीच।

**इस बार नया क्या हुआ?**

इस बार हमने ऑथर्स कॉर्नर लाँच किया। इससे लेखक और पाठक के बीच की दूरी कम हुई। लोग पूरी दुनिया के लेखकों से सीधे मिल सके। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विविध परंपराओं के कलाकारों ने हिस्सा लिया। ट्राइबल्स के लिए विशेष आयोजन किया गया। उनकी समस्याओं पर चर्चा हुई। इसमें देश के कई बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। हम चाहते हैं कि जितना खर्चा इस आयोजन में होता है, टिकट, स्टॉल विज्ञापन आदि के माध्यम से हम वो पैसा जेनरेट कर सकें, ताकि सरकार को अतिरिक्त बोझ भी न उठाना पड़े।

**फ्रांस पर फोकस क्यों रखा गया?**

इस बार हमारा विशेष अतिथि देश था फ्रांस। यह मौका था फ्रांस से जुड़े साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक पहलुओं को जानने-समझने का। इसके अलावा, पूरी दुनिया के जिन प्रकाशकों ने हिस्सा लिया, वे अपने साथ लेखकों को लेकर आए। सैकड़ों भारतीय लेखकों के अलावा लगभग 45 विदेशी लेखक इस पुस्तक मेले में शामिल हुए। लेखक और पाठक के बीच संवाद स्थापित हुआ। रचनाएँ पढ़ी गईं। पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। ऑथर्स कॉर्नर बहुत लोकप्रिय और आकर्षण का केंद्र बना रहा।

**क्या कोई कमी इस मेले में रह गई?**

हाँ, समय की कमी रह गई। हमें आयोजन के लिए कम समय मिला और फिर कुल 7 दिन मिले। अगले साल यह मेला 9 दिनों का होगा। तारीख पहले से ही तय हो गई है, हमें बेहतर तैयारी के लिए समय मिल सकेगा।

**इस पुस्तक मेले में कितने देशों की कितनी भाषाओं की किताबें उपलब्ध थीं?**

भारतीय भाषाओं के 1300 प्रकाशकों ने हिस्सा लिया जिसमें 200 विदेशी थे। भारतीय भाषाओं की बात करें तो 24 भाषाओं की लाखों किताबें उपलब्ध थीं। विदेशी प्रकाशक 20 विभिन्न देशों से आए थे। इस बार पुस्तक मेले में 5 लाख से ज्यादा लोग आए। अगले आयोजन में हम और ज्यादा की उम्मीद कर सकते हैं। इतना सब होने के बावजूद हम दूसरे देशों से बहुत पीछे हैं। हमें टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करना होगा। कोरिया में जून में होने वाले पुस्तक मेले में भारत 'सम्मानित अतिथि' देश बनाया गया है। हमें वहाँ भी बहुत सीखने का मौका मिलेगा।

**अब बुक कल्चर की याद क्या अगले मेले में आएगी? मेले से इतर क्या कुछ नहीं?**

हम जल्द ही दिल्ली यूनिवर्सिटी के नॉर्थ और साउथ कैंपस में एक जगह उपलब्ध करवाने जा रहे हैं, जहाँ न सिर्फ किताबें बिकेंगी बल्कि स्टूडेंट्स लेखकों के साथ बातचीत भी कर सकेंगे। तीन-चार महीने में हम ई-स्टोर्स लाँच करने वाले हैं। इसे नेशनल बुक ट्रस्ट की वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

**अगले आयोजन में क्या खास होगा?**

अगला नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 15-23 फरवरी, 2014 को होगा। इसमें विशेष अतिथि देश पोलैंड होगा। तीन नोबेल पुरस्कार विजेता आ रहे हैं। हम पोलैंड से जुड़े हर पहलू को साहित्य के द्वारा समझ पाएँगे। हम ई-बुक्स पर फोकस करेंगे। ऑथर्स कॉर्नर को और बेहतर बनाएँगे। हमें खुशी है कि मेला अब हर साल आयोजित किया जाएगा। हम रीडिंग कल्चर को और विकसित कर सकेंगे।

**बुक कल्चर के लिए क्या करेंगे?**

दिल्ली में पढ़ने का कल्चर नहीं है। हम इसे विकसित करना चाहते हैं। चेन्नई में 50 से ज्यादा पुस्तक मेला होते हैं। दिल्ली में क्यों नहीं? हम ऐसे उपाय खोजेंगे जिससे बच्चे और युवा अधिक से अधिक हमारे साथ जुड़ सकें। यही कल बड़े होंगे। माँ-बाप बनेंगे। अगर अभी से रीडिंग कल्चर इनमें पनप जाता है तो पुस्तकें इनका साथ कभी नहीं छोड़ेंगी। फिर हमारी ये जेनरेशन अच्छा सोचेगी और अच्छा ही करेगी।

# पंजाब में साहित्यिक कार्यक्रम

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला के क्षेत्रीय केंद्र, बठिंडा के सहयोग से 27 अक्तूबर, 2012 से 4 नवंबर, 2012 के दौरान बठिंडा पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। इस पुस्तक मेले में पंजाबी, हिंदी, अँग्रेजी और उर्दू के 55 प्रकाशकों के सौ के करीब स्टॉल लगाए गए। इस पुस्तक मेले में लगभग 80 लाख रुपये मूल्य की पुस्तकों की रिकॉर्ड बिक्री हुई। मेले में ट्रस्ट की ओर से 9 दिनों तक साहित्यिक कार्यक्रम अयोजित किए गए, जिनमें पंजाबी और हिंदी के 110 लेखकों ने भाग लिया। इन साहित्यिक कार्यक्रमों में कवि दरबार, बाल साहित्य, पठन-रुचि, पंजाब के टपरीवास आदि विषयों पर संगोष्ठियों के अलावा पंजाबी और हिंदी के 20 लेखकों से संवाद और साहित्यिक गायिकी के कार्यक्रम आयोजित किए गए। मेले का उद्घाटन ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित लेखक गुरदयाल सिंह ने किया। इस कार्यकम का संयोजन ट्रस्ट के मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक श्री बलदेव सिंह बद्दन ने किया।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से नवंबर, 2012 में पंजाब के विभिन्न स्थानों पर सचल वाहन पुस्तक प्रदर्शनी सह साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ये कार्यक्रम क्रमशः 19-20 नवंबर, 2012 को मेजर अजायब सिंह मेमोरियल स्कूल, जीवनवाला, जिला-फरीदकोट; 21-22 नवंबर को संत बड़भाग सिंह कॉलेज, सुखानंद, जिला-मोगा; 23 नवंबर को सरस्वती कन्या महाविद्यालय, जैतों, जिला-फरीदकोट तथा 24 नवंबर को शहीद भगत सिंह बुक सेंटर, पखोवाल, जिला-लुधियाना में आयोजित किए गए। इन साहित्यिक कार्यक्रमों में कवि दरबार, बाल साहित्य पर संगोष्ठी और अपने प्रिय लेखक से मिलिए आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए। पुस्तक परिक्रमा में 5 लाख रुपयों से अधिक की पुस्तकों की बिक्री हुई।

## विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस

के अवसर पर

**23 अप्रैल, 2013 को**

अमृतसर की 6 साहित्यिक सभाओं के सहयोग से

एक दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन

**स्थान :** स्वरूप रानी सरकारी कॉलेज (लड़कियाँ), अमृतसर, पंजाब

**समय :** सुबह 10 से शाम 7 बजे तक

***कार्यक्रम :*** **ट्रस्ट की 8 पुस्तकों का लोकार्पण**

**'पाठकों में पढ़ने की रुचि की कमी : समस्या और समाधान' विषय पर संगोष्ठी**

और **कवि दरबार**

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/04/2013

# चिट्ठीघर

मुखपृष्ठ पर येरूसलेम अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला तथा अंदर कटक में पुस्तक मेला संबंधित प्रकाशित रिपोर्ट सहित अन्य रिपोर्ट भी ज्ञान बढ़ाने वाली थी। नेशनल बुक ट्रस्ट के नवीनतम प्रकाशन तथा पुस्तक समीक्षा के माध्यम से ट्रस्ट एवं अन्य प्रकाशनों की नवीनतम पुस्तकों के बारे में अच्छी जानकारी मिलती है।

**प्रो. शामलाल कौशल,** रोहतक, हरियाणा

पुस्तकें ज्ञान की संचित सामग्री का लिपिबद्ध कोश होती हैं। **संवाद** के द्वारा देश-विदेश में किए जा रहे पुस्तक मेलों और इनके आयोजनों के अवसर पर विद्वानों द्वारा किए गए उद्‌बोधन और विचारों का इसके द्वारा प्रचार-प्रसार होता है तथा समीक्षा-समालोचना के नए-नए कपाट खुलते हैं।

विश्व पुस्तक मेला आयोजन के संबंध में ज्ञानवर्द्धक रिपोर्ट पढ़ने को मिली। भारतीय जनजातियों के साहित्य एवं कला पर आधारित विश्व पुस्तक मेला का समापन हो गया, पर कहना चाहता हूँ कि पुस्तकों का महत्व आज भी वैसा ही है। पुस्तकें मानवीय अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन हैं।

**सूर्यप्रसाद शुक्ल,** कानपुर, उ.प्र.

विश्व पुस्तक मेला की समस्त गतिविधियों का सचित्र विवरण पढ़कर प्रसन्नता हुई। मेला स्तरीय एवं सफल रहा यह बड़ी उपलब्धि रही।

**कुलभूषण सोनी 'कवि',** सुल्तानपुरी, दिल्ली

पुस्तक-संसार का अंतरराष्ट्रीय संदेशवाहक **संवाद** निःसंदेह एक अमूल्य स्रोत है। यह विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक गतिविधियों से जोड़ने वाला एक सार्थक प्रयास है।

**महावीर प्रकाश मुकेश,** सिरसा, हरियाणा

**संवाद** फरवरी का विश्व पुस्तक मेला केंद्रित विशेष अंक पढ़ा, लगा जैसे आँखों देखा हाल पढ़ रहा हूँ। मेले की सचित्र झाँकी का-सा आभास हुआ। **मुकुन्द कौशल,** दुर्ग, छत्तीसगढ़

मेला अब पुस्तकों का फैला देश-विदेश
हर्ष हुआ यह जानकर शामिल भारत देश।
(संदर्भ : येरूसलेम अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला)

**पं. गिरिमोहन गुरु,** होशंगाबाद, म.प्र.

# हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

4 अप्रैल, 2013 को ट्रस्ट-मुख्यालय सभागार, नई दिल्ली में हिंदी सलाहकार समिति की बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में विशिष्ट अतिथि श्री नामवर सिंह के अलावे हिंदी सलाहकार समिति के जो सदस्य उपस्थित थे, वे थे–प्रो. केदारनाथ सिंह, प्रो. मैनेजर पांडेय, प्रो. रामबक्ष, श्री प्रभाकर श्रोत्रिय, प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल, श्रीमती चित्रा मुद्‌गल, श्री रवींद्र कालिया, डॉ. शेरजंग गर्ग, श्री अब्दुल बिस्मिल्लाह तथा श्रीमती नासिरा शर्मा। बैठक में ट्रस्ट की ओर से ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन, ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर, ट्रस्ट में मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक श्री बदलेव सिंह बद्दन समेत हिंदी संपादक श्रीमती उमा बंसल, श्री पंकज चतुर्वेदी तथा श्री ललित किशोर मंडोरा उपस्थित थे।

**नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

**नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया**
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

**भारत सरकार के सेवार्थ**

***डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :***
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070